॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Roshan Kumar Nagesh
07/11/2010 04:00 AM
Bhawanipatna, Odisha

निर्मित

AstroRobo
KNOW YOUR FORTUNE

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	07/11/2010
जन्म समय	04:00
जन्म स्थान	Bhawanipatna, Odisha
अक्षांश	19 N 54
देशांतर	83 E 09
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	24:00:31
सूर्योदय	6:1:23
सूर्यास्त	17:20:24

घात चक्र

महीना	भाद्रपद
तिथि	5,10,15
दिन	शनिवार
नक्षत्र	श्रावण
योग	शुक्ल
करण	कौलव
प्रहर	1
चंद्र	8

पंचांग विवरण

तिथि	शुक्ल प्रतिपदा
योग	सौभाग्य
नक्षत्र	विशाखा
करण	बावा

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	कीट
योनि	व्याघ्र
गण	राक्षस
नाड़ी	अंत्य
जन्म राशि	वृश्चिक
राशि स्वामी	मंगल
नक्षत्र	विशाखा
नक्षत्र स्वामी	गुरु
चरण	4
युञ्जा	मध्य
तत्त्व	जल
नामाक्षर	तो
पाया	चांदी
लग्न	कन्या
लग्न स्वामी	बुध

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	तुला	20:23:34	शुक्र	विशाखा	गुरु	2
चन्द्र	--	वृश्चिक	00:08:48	मंगल	विशाखा	गुरु	3
मंगल	--	वृश्चिक	12:57:09	मंगल	अनुराधा	शनि	3
बुध	--	वृश्चिक	02:53:49	मंगल	विशाखा	गुरु	3
गुरु	हाँ	कुम्भ	29:43:12	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	6
शुक्र	हाँ	तुला	06:30:54	शुक्र	चित्रा	मंगल	2
शनि	--	कन्या	18:07:55	बुध	हस्त	चन्द्र	1
राहु	हाँ	धनु	11:12:35	गुरु	मूल	केतु	4
केतु	हाँ	मिथुन	11:12:35	बुध	आर्द्रा	राहु	10
लग्न	--	कन्या	21:40:44	बुध	हस्त	चन्द्र	1

सूर्य
तुला
विशाखा
सम

चन्द्र
वृश्चिक
विशाखा
हानिप्रद

मंगल
वृश्चिक
अनुराधा
हानिप्रद

बुध
वृश्चिक
विशाखा
सम

गुरु
कुम्भ
पूर्व भाद्रपद
हानिप्रद

शुक्र
तुला
चित्रा
योगकारक

शनि
कन्या
हस्त
सम

राहु
धनु
मूल
--

केतु
मिथुन
आर्द्रा
--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

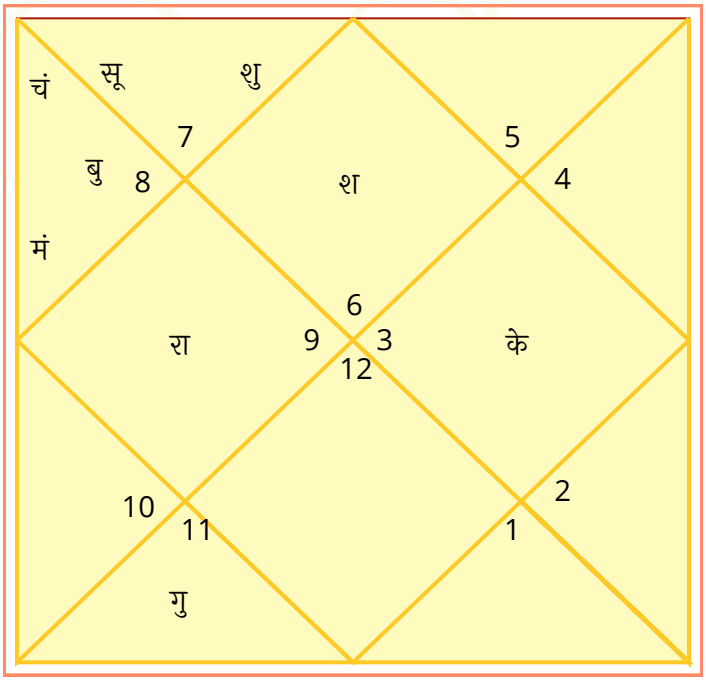

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

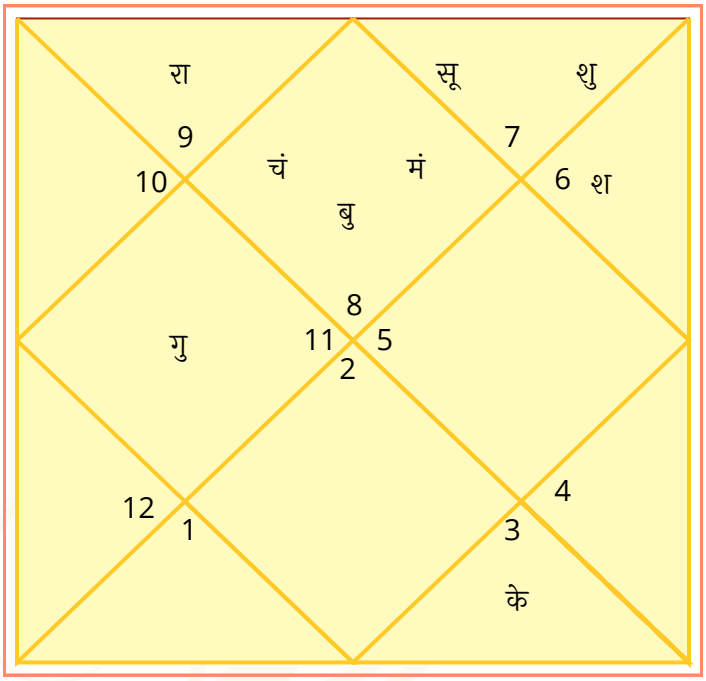

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

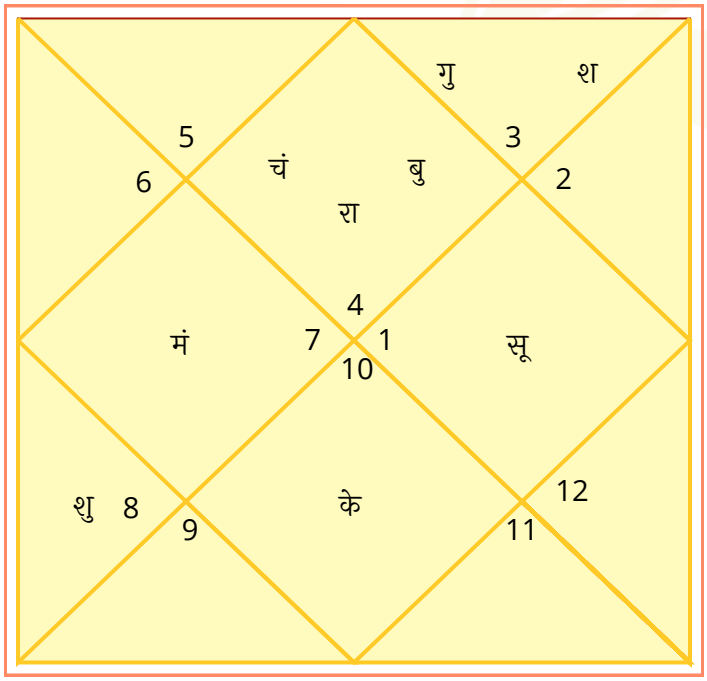

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

Bhawanipatna, Odisha

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

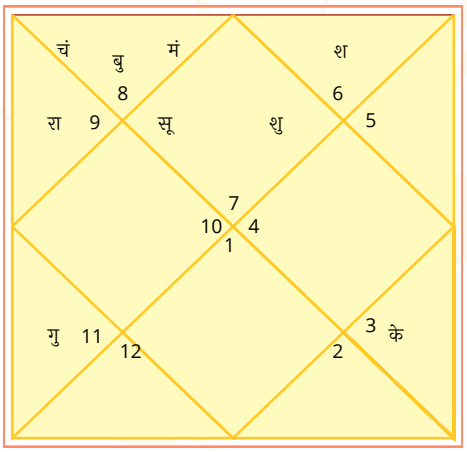

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

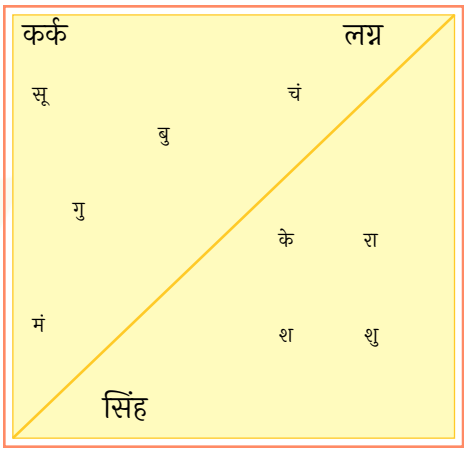

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

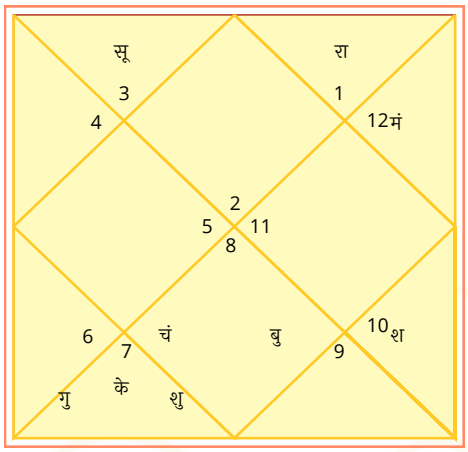

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

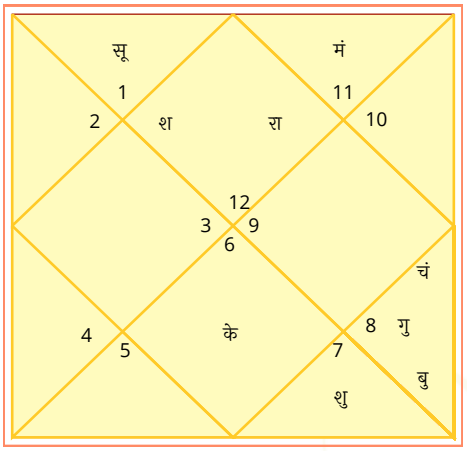

भाग्य

पंचमांश कुंडली

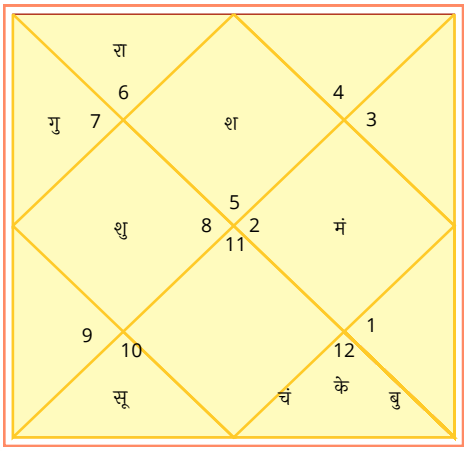

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

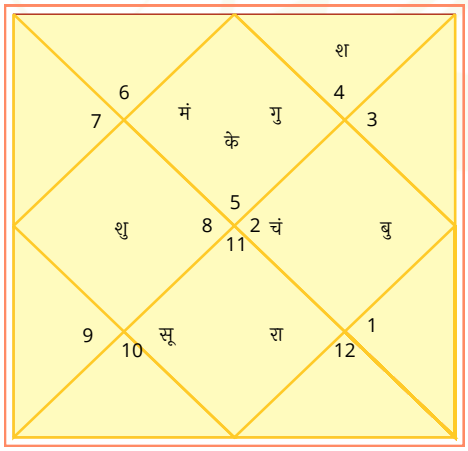

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

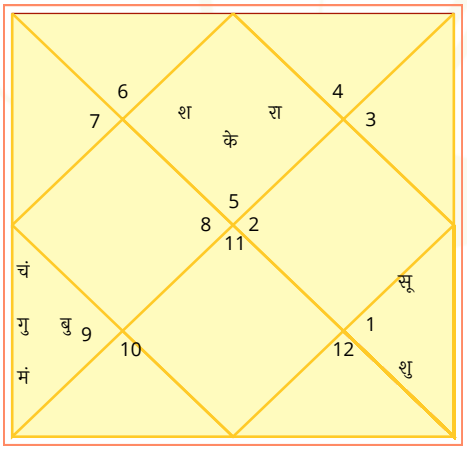

आयु

दशमांश कुंडली

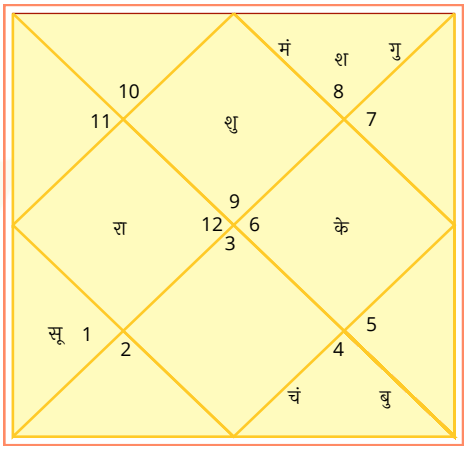

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

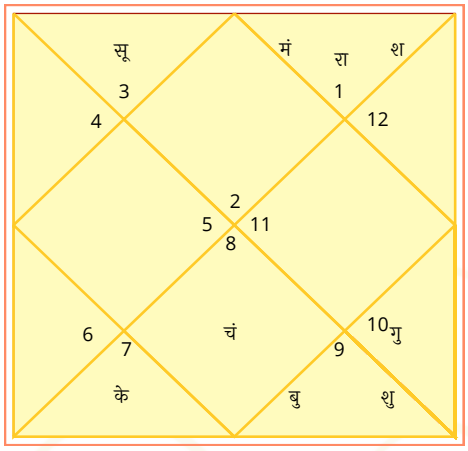

माता-पिता, पैतृक सुख

Bhawanipatna, Odisha

भाव सन्धि

लग्न - 21:40:44 दशम भाव मध्य - 21:22:35

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	कन्या	21:40:44	तुला	06:37:42
2	तुला	21:34:41	वृश्चिक	06:31:40
3	वृश्चिक	21:28:38	धनु	06:25:37
4	धनु	21:22:35	मकर	06:25:37
5	मकर	21:28:38	कुम्भ	06:31:40
6	कुम्भ	21:34:41	मीन	06:37:42
7	मीन	21:40:44	मेष	06:37:42
8	मेष	21:34:41	वृष	06:31:40
9	वृष	21:28:38	मिथुन	06:25:37
10	मिथुन	21:22:35	कर्क	06:25:37
11	कर्क	21:28:38	सिंह	06:31:40
12	सिंह	21:34:41	कन्या	06:37:42

चलित कुंडली

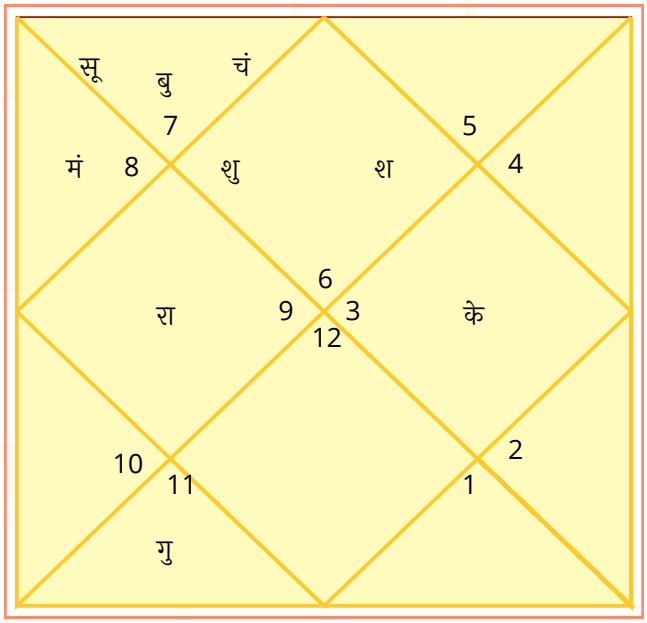

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

विम्शोत्तरी दशा - I

गुरु

03-09-1998 20:19
03-09-2014 20:19

गुरु	22-10-2000 01:07
शनि	05-05-2003 08:19
बुध	10-08-2005 05:55
केतु	17-07-2006 03:31
शुक्र	17-03-2009 03:31
सूर्य	03-01-2010 08:19
चन्द्र	05-05-2011 08:19
मंगल	10-04-2012 05:55
राहु	03-09-2014 20:19

शनि

03-09-2014 20:19
03-09-2033 14:19

शनि	06-09-2017 15:22
बुध	16-05-2020 18:31
केतु	25-06-2021 14:10
शुक्र	25-08-2024 05:10
सूर्य	07-08-2025 04:52
चन्द्र	08-03-2027 12:22
मंगल	16-04-2028 08:01
राहु	21-02-2031 07:07
गुरु	03-09-2033 14:19

बुध

03-09-2033 14:19
03-09-2050 20:19

बुध	31-01-2036 05:46
केतु	27-01-2037 10:43
शुक्र	28-11-2039 07:43
सूर्य	03-10-2040 18:49
चन्द्र	05-03-2042 05:19
मंगल	02-03-2043 10:16
राहु	18-09-2045 19:34
गुरु	25-12-2047 17:10
शनि	03-09-2050 20:19

केतु

03-09-2050 20:19
03-09-2057 14:19

केतु	30-01-2051 23:46
शुक्र	01-04-2052 02:46
सूर्य	06-08-2052 22:52
चन्द्र	08-03-2053 00:22
मंगल	04-08-2053 03:49
राहु	22-08-2054 16:07
गुरु	29-07-2055 13:43
शनि	06-09-2056 09:22
बुध	03-09-2057 14:19

शुक्र

03-09-2057 14:19
03-09-2077 14:19

शुक्र	03-01-2061 02:19
सूर्य	03-01-2062 08:19
चन्द्र	04-09-2063 02:19
मंगल	03-11-2064 05:19
राहु	03-11-2067 23:19
गुरु	04-07-2070 23:19
शनि	03-09-2073 14:19
बुध	04-07-2076 11:19
केतु	03-09-2077 14:19

सूर्य

03-09-2077 14:19
04-09-2083 02:19

सूर्य	22-12-2077 04:07
चन्द्र	22-06-2078 19:07
मंगल	28-10-2078 15:13
राहु	22-09-2079 08:37
गुरु	10-07-2080 13:25
शनि	22-06-2081 13:07
बुध	29-04-2082 00:13
केतु	03-09-2082 20:19
शुक्र	04-09-2083 02:19

विम्शोत्तरी दशा - II

चन्द्र		मंगल		राहु	
04-09-2083 02:19 03-09-2093 14:19		03-09-2093 14:19 04-09-2100 08:19		04-09-2100 08:19 04-09-2118 20:19	
चन्द्र	04-07-2084 11:19	मंगल	30-01-2094 17:46	राहु	18-05-2103 12:31
मंगल	02-02-2085 12:49	राहु	18-02-2095 06:04	गुरु	11-10-2105 02:55
राहु	04-08-2086 09:49	गुरु	25-01-2096 03:40	शनि	17-08-2108 02:01
गुरु	04-12-2087 09:49	शनि	04-03-2097 23:19	बुध	06-03-2111 11:19
शनि	04-07-2089 17:19	बुध	02-03-2098 04:16	केतु	23-03-2112 23:37
बुध	04-12-2090 03:49	केतु	29-07-2098 07:43	शुक्र	24-03-2115 17:37
केतु	05-07-2091 05:19	शुक्र	28-09-2099 10:43	सूर्य	16-02-2116 11:01
शुक्र	04-03-2093 23:19	सूर्य	03-02-2100 06:49	चन्द्र	17-08-2117 08:01
सूर्य	03-09-2093 14:19	चन्द्र	04-09-2100 08:19	मंगल	04-09-2118 20:19

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	शनि	03-09-2014 20:19	03-09-2033 14:19
अंतर्दशा	चन्द्र	07-08-2025 04:52	08-03-2027 12:22
प्रत्यंतर दशा	राहु	28-10-2025 03:08	22-01-2026 21:04
सूक्ष्म दशा	केतु	17-12-2025 17:36	22-12-2025 19:02

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

योगिनी दशा - I

धान्य (3 वर्ष)

26-7-2008 9:3
26-7-2011 9:3

धान्य	25-10-2008 16:33
भ्रामरी	24-2-2009 10:33
भद्रिका	26-7-2009 15:3
उल्का	25-1-2010 6:3
सिद्धि	26-8-2010 7:33
संकटा	26-4-2011 19:33
मंगला	27-5-2011 6:3
पिंगला	26-7-2011 9:3

भ्रामरी (4 वर्ष)

26-7-2011 9:3
26-7-2015 9:3

भ्रामरी	4-1-2012 17:3
भद्रिका	25-7-2012 15:3
उल्का	26-3-2013 3:3
सिद्धि	4-1-2014 5:3
संकटा	24-11-2014 21:3
मंगला	4-1-2015 11:3
पिंगला	26-3-2015 15:3
धान्य	26-7-2015 9:3

भद्रिका (5 वर्ष)

26-7-2015 9:3
26-7-2020 9:3

भद्रिका	5-4-2016 0:33
उल्का	3-2-2017 9:33
सिद्धि	24-1-2018 12:3
संकटा	6-3-2019 8:3
मंगला	26-4-2019 1:33
पिंगला	5-8-2019 12:33
धान्य	4-1-2020 17:3
भ्रामरी	26-7-2020 9:3

उल्का (6 वर्ष)

26-7-2020 9:3
26-7-2026 9:3

उल्का	26-7-2021 15:3
सिद्धि	25-9-2022 18:3
संकटा	25-1-2024 18:3
मंगला	26-3-2024 15:3
पिंगला	26-7-2024 9:3
धान्य	25-1-2025 0:3
भ्रामरी	25-9-2025 12:3
भद्रिका	26-7-2026 9:3

सिद्धि (7 वर्ष)

26-7-2026 9:3
26-7-2033 9:3

सिद्धि	5-12-2027 12:33
संकटा	25-6-2029 16:33
मंगला	4-9-2029 17:3
पिंगला	24-1-2030 18:3
धान्य	25-8-2030 19:33
भ्रामरी	5-6-2031 21:33
भद्रिका	26-5-2032 0:3
उल्का	26-7-2033 9:3

संकटा (8 वर्ष)

26-7-2033 9:3
26-7-2041 9:3

संकटा	6-5-2035 17:3
मंगला	26-7-2035 21:3
पिंगला	5-1-2036 5:3
धान्य	4-9-2036 17:3
भ्रामरी	26-7-2037 9:3
भद्रिका	5-9-2038 5:3
उल्का	5-1-2040 5:3
सिद्धि	26-7-2041 9:3

योगिनी दशा - II

मंगला (1 वर्ष)

26-7-2041 9:3
26-7-2042 9:3

मंगला	5-8-2041 12:33
पिंगला	25-8-2041 19:33
धान्य	25-9-2041 6:3
भ्रामरी	4-11-2041 20:3
भद्रिका	25-12-2041 13:33
उल्का	24-2-2042 10:33
सिद्धि	6-5-2042 11:3
संकटा	26-7-2042 9:3

पिंगला (2 वर्ष)

26-7-2042 9:3
26-7-2044 9:3

पिंगला	4-9-2042 23:3
धान्य	4-11-2042 20:3
भ्रामरी	25-1-2043 0:3
भद्रिका	6-5-2043 11:3
उल्का	5-9-2043 5:3
सिद्धि	25-1-2044 6:3
संकटा	5-7-2044 14:3
मंगला	26-7-2044 9:3

धान्य (3 वर्ष)

26-7-2044 9:3
26-7-2047 9:3

धान्य	25-10-2044 16:33
भ्रामरी	24-2-2045 10:33
भद्रिका	26-7-2045 15:3
उल्का	25-1-2046 6:3
सिद्धि	26-8-2046 7:33
संकटा	26-4-2047 19:33
मंगला	27-5-2047 6:3
पिंगला	26-7-2047 9:3

भ्रामरी (4 वर्ष)

26-7-2047 9:3
26-7-2051 9:3

भ्रामरी	4-1-2048 17:3
भद्रिका	25-7-2048 15:3
उल्का	26-3-2049 3:3
सिद्धि	4-1-2050 5:3
संकटा	24-11-2050 21:3
मंगला	4-1-2051 11:3
पिंगला	26-3-2051 15:3
धान्य	26-7-2051 9:3

भद्रिका (5 वर्ष)

26-7-2051 9:3
26-7-2056 9:3

भद्रिका	5-4-2052 0:33
उल्का	3-2-2053 9:33
सिद्धि	24-1-2054 12:3
संकटा	6-3-2055 8:3
मंगला	26-4-2055 1:33
पिंगला	5-8-2055 12:33
धान्य	4-1-2056 17:3
भ्रामरी	26-7-2056 9:3

उल्का (6 वर्ष)

26-7-2056 9:3
26-7-2062 9:3

उल्का	26-7-2057 15:3
सिद्धि	25-9-2058 18:3
संकटा	25-1-2060 18:3
मंगला	26-3-2060 15:3
पिंगला	26-7-2060 9:3
धान्य	25-1-2061 0:3
भ्रामरी	25-9-2061 12:3
भद्रिका	26-7-2062 9:3

योगिनी दशा - III

सिद्धि (7 वर्ष)

26-7-2062 9:3
26-7-2069 9:3

सिद्धि	5-12-2063 12:33
संकटा	25-6-2065 16:33
मंगला	4-9-2065 17:3
पिंगला	24-1-2066 18:3
धान्य	25-8-2066 19:33
भ्रामरी	5-6-2067 21:33
भद्रिका	26-5-2068 0:3
उल्का	26-7-2069 9:3

संकटा (8 वर्ष)

26-7-2069 9:3
26-7-2077 9:3

संकटा	6-5-2071 17:3
मंगला	26-7-2071 21:3
पिंगला	5-1-2072 5:3
धान्य	4-9-2072 17:3
भ्रामरी	26-7-2073 9:3
भद्रिका	5-9-2074 5:3
उल्का	5-1-2076 5:3
सिद्धि	26-7-2077 9:3

मंगला (1 वर्ष)

26-7-2077 9:3
26-7-2078 9:3

मंगला	5-8-2077 12:33
पिंगला	25-8-2077 19:33
धान्य	25-9-2077 6:3
भ्रामरी	4-11-2077 20:3
भद्रिका	25-12-2077 13:33
उल्का	24-2-2078 10:33
सिद्धि	6-5-2078 11:3
संकटा	26-7-2078 9:3

पिंगला (2 वर्ष)

26-7-2078 9:3
26-7-2080 9:3

पिंगला	4-9-2078 23:3
धान्य	4-11-2078 20:3
भ्रामरी	25-1-2079 0:3
भद्रिका	6-5-2079 11:3
उल्का	5-9-2079 5:3
सिद्धि	25-1-2080 6:3
संकटा	5-7-2080 14:3
मंगला	26-7-2080 9:3

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

Bhawanipatna, Odisha

शुभाशुभ अंक

3	7	6
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	Roshan Kumar Nagesh
जन्म दिनांक	7-11-2010
मूलांक	7
मूलांक स्वामी	केतु
मित्र अंक	3,2,6
सम अंक	4,5,8
शत्रु अंक	1,9
शुभ दिन	रविवार, सोमवार
शुभ रत्न	Cat's Eye
शुभ उपरत्न	सुनहरा हकीक
शुभ देवता	नरसिंह भगवान
शुभ धातु	लोहा
शुभ रंग	काला
शुभ मंत्र	|| ओम केंग केतवे नमः ||

आपके बारे में

आपका मूलांक सात है । अंक सात का अधिष्ठाता भारतीय मतनुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह को मना गया है । इन ग्रहों के थोड़े-बहुत प्रभाव आपके ऊपर आयेंगे । मूलांक सात के प्रभाववश आपके अन्दर कल्पना शक्ति की मात्रा अघिक रहेगी। काव्य रचना, गीत-संगीत सुनना, दूरदर्शन देखना आपकी अभिरुचि में समाहित रहेगा । ललित कलाओं, लेखन, साहित्या आदि में आपकी रुचि रहेगी । आर्थिक सफलताएं आपको अघिक नहीं मिलेंगी तथा धन संग्रह करना भी आपको मुश्किल लगेगा । यात्रा , पर्यटन, सैर-सपाटा इत्यादि आपको विशेष अच्छा लगेगा। दूसरो के मन की बात समझने में आप निपुणता हासिल करेंगे एवं सामने वाले को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति भी आपके अन्दर रहेगी । धर्म के क्षेत्र में आप परिवर्तनशील विचारधारा के रहेंगे एवं पुरानी रुढियों, रीतियों में अधिया रुचि नहीं लेंगे । आपको ऐसे रोजगार-व्यापर पसंद आयेंगे,जिनमें यात्रायें होती रहती हो तथा दूर-दूर के देशों से सम्पर्क बना रहे। आप ऐसा ही रोजगार चुनेंगे, जिनमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। ज्ञान की अधिकतावश जहाँ आप दूसरों के मन की बात को जान जायेंगे वहीं आपको स्वप्न भी अद्भुत प्रकार के आते रहेंगे । आपको विदेशो से, जहाज, मोटर इत्यादि वाहनो से विषेश लाभ प्राप्त होंगे ।

आपके के लिए शुभ समय

21 जून से 25 जुलाई तक पाश्चात्य मत से, सूर्य कर्क राशि में रहता है तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक, भारतीय मत से सूर्य कर्क राशि में रहता है। इस समय जल तत्व की वृद्धि होती है। अतः उपयुक्त समय मूलांक सात के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए केतु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, केतु गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। केतु गायत्री मंत्र - ||ऊँ पद्मपुत्राय वि◌़हे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।।

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष उदित रूप में विद्यमान है।

आपको कुंडली में कालसर्प दोष आंशिक रूप से विद्यमान है।

कालसर्प नाम

शंखपाल

दिशा

आंशिक उदि

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में शंखपाल नामक कालसर्प योग बन रहा है।
इससे घर-द्वार, जमीन-जायदाद व चल- अचल संपत्ति संबंधी थोड़ी बहुत कठिनाइयां आती हैं और उससे जातक को कभी-कभी बेवजह चिंता घेर लेती है तथा विद्या प्राप्ति में भी उसे आंशिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ती है। जातक को माता से कोई, न कोई किसी न किसी समय आंशिक रूप में तकलीफ मिलती है। सवारी एवं नौकरों की वजह से भी कोई न कोई कष्ट होता ही रहता है। इसमें उन्हें कुछ नुकसान भी उठाना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी वह कभी-कभी तनावग्रस्त हो जाता है। चंद्रमा के पीड़ित होने के कारण जातक समय-समय पर मानसिक संतुलन खोया रहता है।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें ।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व नीले वस्त्रा का दान करें

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	24%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं ।

मांगलिक विश्लेषण - II

भाव के आधार पर

शनि लग्न भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

सूर्य द्वितीय भाव में कुंडली में स्थित है।

राहु आपके कुंडली में चतुर्थ भाव में है।

दृष्टि के आधार पर

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

केतु की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को राहु देख रहा है।

सप्तम भाव शनि से दृष्ट है।

सूर्य , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

राहु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	21-12-2025
शनि राशि	मीन
चंद्र राशि	वृश्चिक
वक्री शनि	नहीं

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

पन्ना

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

नीलम

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

हीरा

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

जीवन रत्न - पन्ना

विकल्प	हरा गोमेद	दिन	बुधवार
उंगली	कनिष्ठा	अधिदेवता	बुद्ध
भार	4 - 6.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पन्ना का स्वामी ग्रह बुध है । पन्ना धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, बलवान शरीर, धन, संपत्ति और अच्छी नेत्र दृष्टि की प्राप्ति होती है । यह दुष्ट आत्माओं, सर्प दंश और बुरी नज़र से कुप्रभावों से बचाता है। पन्ना मिर्गी एवं पागलपन के इलाज और बुरे स्वप्नों से संरक्षण में भी सहायक है ।

भार व धातु

पन्ना का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पन्ना रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पन्ना धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ब्रां ब्रीं सः बुधाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पन्ना की अंगूठी को दाहिने हाथ की कनिष्ठा अर्थात छोटी उंगली में धारण करें ।

विकल्प

पन्ना के स्थान पर अक्वामरीन (हरित नील), पेरिडोट, हरा जिक्रोन, ग्रीन एगेट या हरा जेड(हरिताश्म) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पन्ना को लाल मूंगा, मोती, पुखराज और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न - नीलम

विकल्प	नीली	दिन	शनिवार
उंगली	मध्यमिका	अधिदेवता	शनि
भार	3 - 4.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

नीलम रत्न का स्वामी ग्रह शनि है । नीलम धारण करने से स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है ।

भार व धातु

वजन में कम से कम ५ कैरेट का दोषरहित नीलम पहनना चाहिए । इसे स्टील या अष्ट धातु से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

नीलम रत्न को किसी भी शनिवार को सूर्यास्त से दो घंटे पहले धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । नीलम धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, नीलम को मध्यमा अर्थात बीच की अंगुली में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

नीलम के स्थान पर नीला जिक्रोन, जामुनिया, नीली तूरमुली, लाजावर्द, ब्लू स्पिनल और नीली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि नीलम को माणिक, मोती, लाल मूंगा और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न - हीरा

विकल्प	ओपल / जिरकॉन	दिन	शुक्रवार
उंगली	कनिष्ठा	अधिदेवता	शुक्र
भार	1 - 4.25 कैरेट	धातु	चांदी

विवरण

हीरा रत्न का स्वामी ग्रह शुक्र है । हीरा धारण करने से धैर्य, सफलता, धन, समृद्धि, निर्मलता की प्राप्ति होती है । हीरा धारण करने वाला व्यक्ति निडर, बुद्धिमान और शिष्ट होता है। हीरा पहनने से धारक धार्मिक शास्त्रों में प्रवीण बनाता है। यह रत्न बुरी आत्माओं के हानिकारक प्रभावों और साँप के दंश से भी संरक्षण करता है।

भार व धातु

वजन में १-१/२ कैरेट का दोषरहित हीरा पहनना चाहिए । इसे प्लटिनम या चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

हीरा को शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । हीरा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

हीरे की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, हीरा को दाहिने हाथ की छोटी उंगली अर्थात कनिष्ठा में धारण किया जा सकता है ।

विकल्प

हीरा के स्थान पर सफेद नीलम, सफेद जिक्रोन और सफेद तूरमली आदि विकल्प रत्नों को भी धारण किया सकता है ।

सावधानी

हीरा को माणिक, मोती, लाल मूंगा और पुखराज के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

लग्न फल - कन्या

स्वामी	बुध
प्रतीक	कन्या
विशेषताएँ	पृथ्वी तत्त्व, द्विस्वभाव, दक्षिण
भाग्यशाली रत्न	हीरा
व्रत का दिन	शुक्रवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

कन्या लग्न के व्यक्ति व्यावहारिक, विश्लेषणात्मक, भेदभाव करने वाले ,तुनुकमिज़ाज शांत, , शर्मीले , गंभीर, विचारशील,सख्त,सतर्क,विनयशील,जानकारी के लिए चौकस, और कुछ हद तक आत्म केन्द्रित होते हैं।

आप एक, सरल सक्रिय और सतर्क दिमाग के मालिक हैं । ज्ञान पाना और उसका अच्छे कार्यों में उपयोग करना आप के लिए महत्वपूर्ण हैं। आप जीवन में पूर्णता पाने के लिए सतत प्रयास करते हैं और जीवन में आपने अपने आदर्श और मापदंड इतनी ऊंचे स्थापित किये हुए हैं कि,हर कोई आपके साथ या आसपास रहना चाहता है।

> " लेकिन कई बार दूसरे उन उच्च आदर्शों के लिए पर्याप्त 'अच्छे ' नहीं हो सकते । आपके भीतर यह विशेष योग्यता है कि कहाँ क्या गलत है यह आप पता लगा लेते हैं ।

कभी कभी, हालांकि, आप जिन्हे प्यार करते हैं ,उनके ऊपर और उनकी गतिविधियों पर आपकी आलोचनात्मक दृष्टि अक्सर संबंधों में खटास पैदा कर सकती हैं। आपको निराशावाद औरस्वयं की अत्यधिक आलोचना, अपने इन दो दोषों में सुधार करने की कोशिश करनी चाहिए।आप की प्रवृत्ति विशेष रूप से छोटे क्रिया-कलापों और छोटे छोटे विवरण के बारे में बहुत ज्यादा चिंता करने की हो सकती है।

बहुत ज्यादा चिंता स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकती है। आप को हर अनुभव को पचाने और कड़वाहट,

अफसोस, द्वेष या असंतोष के बिना इसे आत्मसात करना, सीखने की जरूरत है। अयोग्यता की भावना द्वारा उपजी अपने अन्दर की नकारात्मकता से आपको छुटकारा पाने की ज़रूरत है। आप अपनी उम्र से हमेशा छोटे लगते हैं,भले ही आप कितने बडे हों ।

आप बहुत बेचैन और परेशान होते हैं, क्योंकि आप पर कभी कभी जीवन का बोझ अधिक हो जाता है। कई बार आप बहुत दुविधा में और अनिश्चित हो सकते है ।

> " कन्या लग्न का स्वामी बुध है इसलिए बुध आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा ।

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

सेवाभाव

सकारात्मक लक्षण

मेधावी | विश्लेषणात्मक | अच्छी स्मृति | समर्पित

नकारात्मक लक्षण

आत्मविश्वास की कमी | स्वार्थपरायण | चिंतित | अतिपेक्षित

With the help of our experts we does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your horoscope and provide you this Janam Patrika in PDF format.

iRise WebnApp Technologies Pvt. Ltd.

http://www.astrorobo.com
+91-79990-95593
iwebnapp@gmail.com